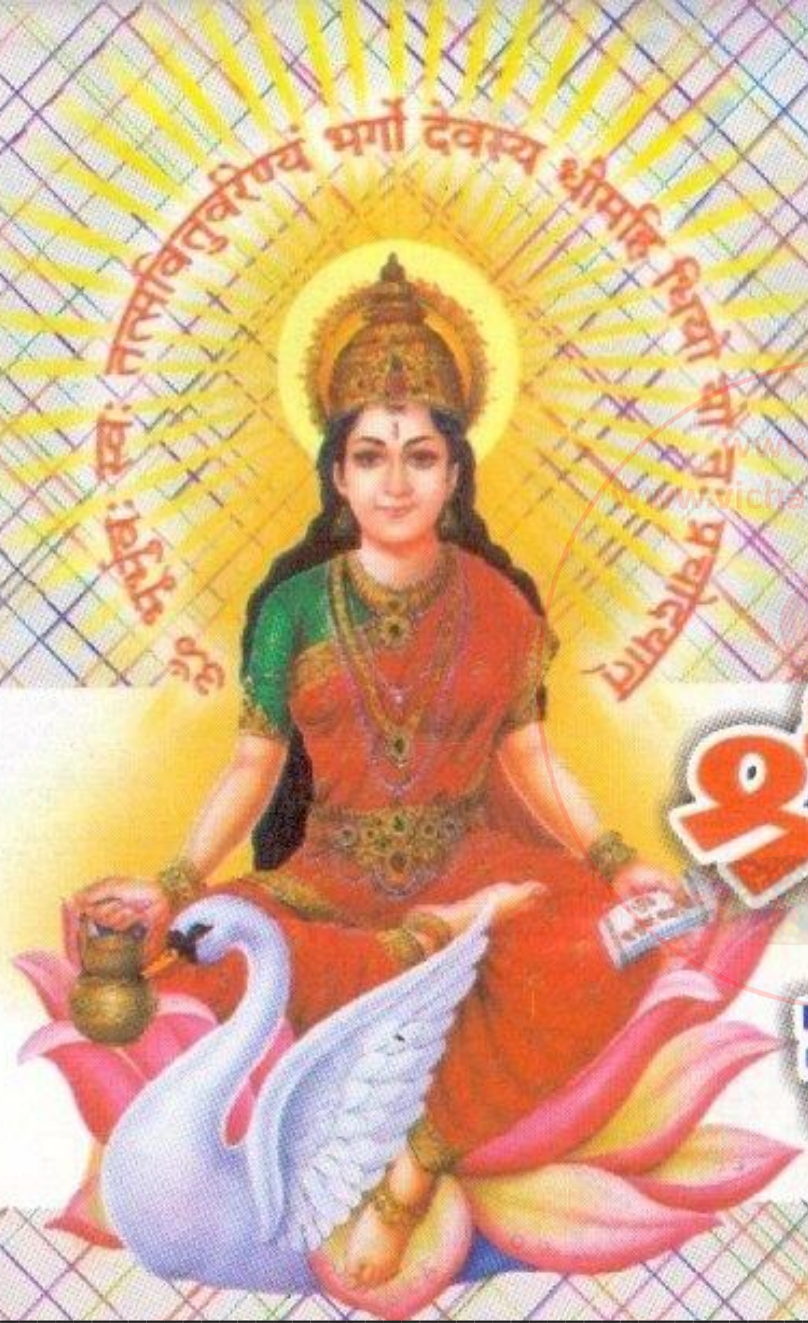

श्री गायत्री चालीसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yug Rishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री उपासना हम सब के लिए अनिवार्य

गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी कहा गया है। वेदों से लेकर धर्मशास्त्रों तक का समस्त दिव्य ज्ञान गायत्री के बीजाक्षरों का ही विस्तार है। माँ गायत्री का आँचल पकड़ने वाला साधक कभी निराश नहीं हुआ। इस मंत्र के चौबीस अक्षर चौबीस शक्तियों, सिद्धियों के प्रतीक हैं। गायत्री उपासना करने वाले साधक की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं, ऐसा ऋषिगणों का अभिमत है।

गायत्री वेदमाता है एवं मानव मात्र का पाप नाश करने की शक्ति उनमें है। इससे अधिक पवित्र करने वाला और कोई मंत्र स्वर्ग और पृथ्वी पर नहीं है। भौतिक लालसाओं से पीड़ित व्यक्ति के लिए भी और आत्मकल्याण की इच्छा रखने वाले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मुमुक्षु के लिए भी एक मात्र आश्रय गायत्री ही है। गायत्री से आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन एवं ब्रह्मवर्चस के सात प्रतिफल अथर्ववेद में बताए गये हैं, जो विधिपूर्वक उपासना करने वाले हर साधक को निश्चित ही प्राप्त होते हैं।

भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले हर प्राणी को नित्य-नियमित गायत्री उपासना करनी चाहिए। विधिपूर्वक की गई उपासना साधक के चारों ओर एक रक्षा कवच का निर्माण करती है व विभिन्न विपत्तियों, आसन्न विभीषिकाओं से उसकी रक्षा करती है। प्रस्तुत समय इक्कीसवीं सदी का ब्रह्म मुहूर्त है। आगामी वर्षों में पूरे विश्व में तेजी से परिवर्तन होगा। इस विशिष्ट समय में की गयी गायत्री उपासना के प्रतिफल भी विशिष्ट होंगे।

गायत्री उपासना का विधि-विधान

गायत्री उपासना कभी भी, किसी भी स्थिति में की जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती है। हर स्थिति में यह लाभदायी है, परंतु विधिपूर्वक भावना से जुड़े न्यूनतम कर्मकांडों के साथ की गई उपासना अति फलदायी मानी गई है। तीन माला गायत्री मंत्र का जप आवश्यक माना गया है। शौच-स्नान से निवृत होकर नियत स्थान, नियत समय पर सुखासन में बैठकर नित्य गायत्री उपासना की जानी चाहिए।

उपासना का विधि विधान इस प्रकार है-

(१) **पवित्रीकरण**- बाँए हाथ में जल लेकर उसे दाहिने हाथ से ढक लिया जाए। पवित्रीकरण का मंत्रोच्चारण किया जाए। तदुपरांत उस जल को सिर तथा शरीर पर छिड़क लिया जाए।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) आचमन–वाणी, मन व अत:करण की शुद्धि के लिए चम्मच से तीन बार जल का आचमन करें। हर मंत्र के साथ एक आचमन किया जाए।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१ ॥

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२ ॥

ॐ सत्यं यश: श्रीर्मयि, श्री: श्रयतां स्वाहा ॥३ ॥

(३) शिखा स्पर्श एवं वंदन– शिखा के स्थान को भीगी पाँचों अंगुलियों से स्पर्श करते हुए भावना करें कि गायत्री के इस प्रतीक के माध्यम से सदा सद्विचार ही यहाँ स्थापित रहेंगे। निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेज: समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

(४) प्राणायाम– श्वाँस को धीमी गति से बाहर से गहरी खींचकर रोकना व बाहर निकालना प्राणायाम के कृत्य में आता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपोज्योतीरसोऽमृतं, ब्रह्म भूर्भुवः स्वः ॐ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

(५) **न्यास**- बाँयें हाथ की हथेली में जल लेकर दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों को उसमें भिगो कर बताए गए स्थान को मंत्रोच्चार के साथ स्पर्श करें।

ॐ वाङ्मे आस्येऽस्तु। (मुख को)
ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु। (नासिका के दोनो छिद्रों को)
ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु। (दोनों नेत्रों को)
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। (दोनों कानों को)
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। (दोनों भुजाओं को)
ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु। (दोनों जंघाओं को)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि, तनूस्तन्वा मे सह सन्तु

(समस्त शरीर पर जल छिड़के)

(६) देवपूजन– गायंत्री का प्रतीक चित्र सुसज्जित पूजा की वेदी पर स्थापित कर निम्न मंत्र के माध्यम से आवाहन करें।

ॐ आयातु वरदे देवि ! त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोऽस्तु ते ॥३॥

ॐ श्री गायत्र्यै नमः । आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। ततो नमस्कारं करोमि।

(७) गुरु परमात्मा की दिव्य चेतना का वह अंश है, जो साधक का मार्गदर्शन करता है। सद्गुरु का आवाहन निम्न मंत्रोच्चार के साथ करें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥ १॥

ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि। इसके बाद जल, अक्षत्, पुष्प, धूप-दीप तथा नैवेद्य आराध्य के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं।

(८) **जप**-गायत्री मंत्र का जप न्यूनतम तीन माला अर्थात् घड़ी से प्रायः पंद्रह मिनट नियमित रूप से किया जाए, अधिक बन पड़े तो अधिक उत्तम। होंठ हिलते रहें, किंतु आवाज इतनी मंद हो कि पास बैठे व्यक्ति भी सुन न सकें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस प्रकार मंत्र का उच्चारण करते हुए भावना की जाए कि हम निरंतर पवित्र हो रहे हैं। दुर्बुद्धि की जगह सद्बुद्धि की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थापना हो रही है।

(९) गायत्री चालीसा पाठ- गायत्री महाविद्या की अद्भुत शक्तियों के गुण धर्म का ज्ञान प्राप्त करने हेतु गायत्री चालीसा का प्रतिदिन पाठ करना चाहिए।

(१०) सूर्यार्घ्यदान-चालीसा पाठ समाप्ति के पश्चात् पूजा वेदी पर रखे छोटे कलश का जल सूर्य की दिशा में अर्घ्य रूप में निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ाया जाता है।

ॐ सूर्यदेव ! सहस्त्रांशो, तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥
ॐ सूर्याय नमः, आदित्याय नमः, भास्कराय नमः॥

(११) प्रदक्षिणा- सूर्यार्घ्यदान के बाद वहीं पर खड़े-खड़े निम्न मंत्र बोलकर परिक्रमा की जाय।

ॐ यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञात कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यंति प्रदक्षिण पदे-पदे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ ॐ ॥

ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचण्ड।
शांति, क्रांति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखण्ड॥

हे महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली रूपों में स्थित श्री गायत्री माँ ! आप हमारे जीवन में ज्ञान ज्योति प्रकाशित करने वाली हो तथा हमें मेधा, प्रभा, प्रतिभा, शांति, क्रांति, जागृति प्रगति व अखंड शक्ति प्रदान करने वाली हो।

जगत जननि, मंगल करनि, गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा पूरन काम॥

आप विश्वमाता के रूप में जगत का कल्याण करती हो। आप में समस्त सुख निवास करते हैं। हे सावित्री, स्वाहा, स्वधा स्वरूपा पूर्ण काम माँ गायत्री ! आपको प्रणाम करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।
गायत्री नित कलिमल दहनी ॥

पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में सर्वत्र ओंकार व्याप्त है, आप भी गायत्री के रूप में सर्वत्र निवास करती हो और कलि के प्रभाव को नष्ट करती हो।

अक्षर चौबिस परम पुनीता ।
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता ॥

आपके (गायत्री मंत्र के) जो २४ अक्षर हैं, वे परम पुनीत होने से पुण्य प्रदान करने वाले हैं। इन अक्षरों में समस्त शास्त्र, श्रुति और गीता आदि का समावेश है। अर्थात जो व्यक्ति शास्त्र

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदि पढ़ने में असमर्थ हैं, वे आपके इन २४ अक्षरों के जप व स्मरण मात्र से शास्त्र का फल प्राप्त कर लेते हैं।

शाश्वत सतोगुणी सतरूपा ।
सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥

आप शाश्वत हैं, सतोगुण संपन्न हैं, सनातन हैं, सत्य का मार्ग प्रदर्शन करने वाली हैं तथा अमृततुल्य कल्याणकारी व सुपथ पर चलाने वाली हैं।

हंसारूढ़ सितम्बर धारी ।
स्वर्णकांति शुचि गगन बिहारी ॥

हे श्वेतांबर धारण करने वाली, स्वर्ण कांति से युक्त, हंस पर विराजित होकर गगन में विहार करने वाली माँ गायत्री !

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥

आपके एक हाथ में पुस्तक , दूसरे में पुष्प, तीसरे में कमंडलु तथा चौथे हाथ में माला सुशोभित है। हे शुभ्रवर्णा, हे विशाल नेत्रों वाली गायत्री माँ !

ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।
सुख उपजत, दुःख दुरमति खोई ॥

आपके इस स्वरूप का ध्यान करने से हमारा हृदय पुलकित हो जाता है। हमारा हृदय हर्ष और उत्साह से भर उठता है। क्लेश और दुष्प्रवृतियों का नाश हो जाता है। हमें सुख-संपत्ति प्राप्त होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।
निराकार की अद्भुत माया ॥

जिस प्रकार कल्पवृक्ष और कामधेनु मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, उसी प्रकार आप भी अपने साधकों की समस्त सात्विक मनोकामनाओं को सिद्ध करती हैं। आप निर्विकार हैं, फिर भी आपकी माया अपरंपार है। वह ऐसी अद्भुत है कि दृष्टिगोचर नहीं होती, अनुभव की जा सकती है।

तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।
तरै सकल संकट सों सोई ॥

जो कोई व्यक्ति आपकी शरण में आता है वह समस्त संकटों और दु:खों से मुक्त हो जाता है और सुख-शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥

हे माँ ! आप ही सरस्वती हो, लक्ष्मी हो तथा आप ही महाकाली हो। इन तीनों स्वरुपों में आपकी दिव्य ज्योति निराले रूप में ही देदीप्यमान होती है।

तुम्हरी महिमा पार न पावें ।
जो शारद शत मुख गुण गावें ॥

आपकी महिमा अपरंपार है, इसका कोई पार नहीं। शेष और शारदा अनेक मुखों से गान करने पर भी आपकी महिमा का पार नहीं पा सकते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥

आप चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) की जननी हो। आप ब्रह्माणी हो, गौरी हो तथा आप ही सती शिरोमणि सीता स्वरूपा हो।

महामंत्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ॥

विश्व में जितने भी मंत्र हैं, आपके (गायत्री मंत्र) समान न तो अतीत में कोई था, न वर्तमान में है और न भविष्य में होगा। आप समस्त मंत्रों की शिरोमणि हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ॥

इस मंत्र के सतत् जप से मानव हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। पाप तथा अविद्या रूपी अंधकार का नाश हो जाता हैं। निष्क्रियता समाप्त हो जाती है और स्फूर्ति की प्राप्ति होती है। पुण्य एवं विद्या प्राप्त होती है।

सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।
कालरात्रि वरदा कल्यानी ॥

हे माँ ! आप सृष्टि के बीज रूप में जगत जननी हैं। हे भवानी, आप ही काल रात्रि हैं तथा आप ही विश्व का कल्याण करने वाली हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।
तुम सों पावें सुरता तेते ॥

हे सर्व शक्तिवान आद्यशक्ति ! ब्रह्मा को सृजन, विष्णु को पालन तथा शिव को संहार करने की शक्ति आपने ही प्रदान की है।

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥

हे दयामयी माँ ! आप भक्तों की एक मात्र आश्रयदाता हैं। भक्त आपके तथा आप भक्तों की हैं। आपको ये भक्त पुत्र प्राणों से अधिक प्रिय हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी ॥

हे माता गायत्री ! आपकी महिमा का पार नहीं पाया जा सकता। समस्त मय समूह को नष्ट करने वाली त्रिपदा गायत्री माता ! आपकी केवल जय-जयकार करने से समस्त भय भाग जाते हैं।

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।
तुम सम अधिक न जग में आना ॥

इस अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो भी ज्ञान विज्ञान व्याप्त हैं वह सब आपकी ही प्रभुता है। इस विश्व में आपसे बड़ा कोई तत्त्व नहीं हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेषा ॥

हे ज्ञानेश्वरी ! आप अनंत ज्ञान की भंडार हैं, आपको जान लेने के पश्चात ऐसा कुछ शेष नहीं रहता जिसे जाना जाए। आप को प्राप्त कर लेने के पश्चात आपका भक्त या साधक निष्काम हो जाता है उसे कुछ भी क्लेष नहीं रहता।

जानत तुमहिं, तुमहिं ह्वै जाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥

हे सर्वोच्च सत्ता धारिणी माते ! आपका ज्ञान हो जाने पर साधक की सत्ता आप में ही समा जाती है। उसका कोई पृथक अस्तित्त्व नहीं रह जाता। जिस प्रकार पारसमणि के स्पर्श से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुधातु भी स्वर्ण बन जाती है, उसी भाँति आपका साधक भी साध्यमय हो जाता है।

तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं ।
माता तुम सब ठौर समाईं ॥

आपकी दिव्य शक्ति सर्वत्र व्याप्त है। तीनों लोकों में कोई स्थान ऐसा नहीं है जहाँ आपकी दिव्य शक्ति का प्रकाश न हो । हे सर्वव्यापिनी माँ गायत्री, आप तीनों लोकों में समाई हुई हैं।

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥

विश्व ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह नक्षत्र आपकी ही प्रेरणा से गतिमान हैं तथा जीव सृष्टि के समस्त क्रिया कलाप आपकी प्रेरणा से हो रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ॥

आप समस्त सृष्टि को प्राणवान बनाए हुए हैं। आपकी ही प्रेरणा से सृष्टि का सृजन, पालन और संहार होता है। इस संसार में अपने भक्त को आप ही पार लगाती हैं।

मातेश्वरी दया व्रत धारी ।
तुम सन तरे पातकी भारी ॥

हे दयामयी माँ ! आप दया का व्रत धारण किए हुए हो। आप अत्यंत दयावान हो। आपकी दया और कृपा से बड़े से बड़ा पातकी भी संसार सागर से पार हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जापर कृपा तुम्हारी होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ॥

जिस पर आपकी कृपा होती है, उस पर सभी कृपा करते हैं। बलवान से बलवान विरोधी भी उसका बाल बांका नहीं कर सकता।

मंद बुद्धि ते बुधि बल पावें ।
रोगी रोग रहित ह्वै जावें ॥

जो व्यक्ति मंद बुद्धि, विद्याभ्यास में निर्बल तथा विक्षिप्त ही क्यों न हो, आपकी शरण में आने पर एवं आपके महामंत्र गायत्री मंत्र का जप करने से मेधावी, विद्याभ्यास करने में पूर्ण समर्थ हो जाता है तथा रोगी रोग मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दारिद मिटै कटै सब पीरा ।
नाशै दुःख हरै भव भीरा ॥

कैसा भी दुःखी और निर्धन हो, आपकी शरण में आने पर उसके समस्त अभाव मिट जाते है तथा दुःखों का निवारण हो जाता है, साथ ही भव बंधन से मुक्त हो जाता है।

गृह कलेश चित चिंता भारी ।
नासै गायत्री भय हारी ॥

हे विघ्न विनाशनी माँ ! आपके अनुग्रह से पारिवारिक कलह एवं समस्त दुश्चिंताएँ दूर हो जाती हैं। हे अभयदायिनी देवि ! आप अपने जन के भय समूह को पलभर में नष्ट कर देती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संतति हीन सुसंतति पावें ।
सुख संपत्ति युत मोद मनावें ॥

आपकी आराधना करने वाले व्यक्ति को आप सुसंतति प्रदान करती हो। आपका आराधक दैवी संपत्तियाँ प्राप्त करता है और आनंदमय जीवन व्यतीत करता है।

भूत पिशाच सबै भय खावें ।
यम के दूत निकट नहिं आवें ॥

आपके मंत्र का जप करने से भूत पिशाच दुष्ट आत्माएँ भयभीत होकर भाग जाती हैं। गायत्री मंत्र के जपकर्त्ता के निकट यमदूत भी नहीं आ सकते क्योंकि वह तो गायत्री मंत्र के जप के प्रभाव से बैकुंठधाम जाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो सधवा सुमिरें चित लाई ।
अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥

जो सौभाग्वती स्त्री गायत्री चालीसा का एकाग्र चित्त से पाठ करती है, वह अखंड सौभाग्य प्राप्त करती है। दांपत्य सुख भोगती हुई अपने जीवन को सार्थक बनाती है।

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।
विधवा रहै सत्य व्रत धारी ॥

जो कुमारी कन्याएँ इस चालीसा का पाठ करती हैं, उन्हें सुंदर पति एवं संपन्न घर मिलता है। जो विधवा स्त्री इस चालीसा का पाठ करती है, उसका सतीत्व रूपी सत्य धर्म सुरक्षित रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जयति जयति जगदम्ब भवानी ।
तुम सम और दयालु न दानी ॥

हे जगदंबे ! हे भवानी ! आपकी जय हो। हे दयामयी ! आपके समान दयावान, दानी और उदार अन्य कोई नहीं हैं।

जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें ।
सो साधन को सफल बनावें ॥

जो व्यक्ति सद्गुरुदेव से गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त करता है, उसकी सभी साधनाएँ सफल होती हैं। सद्गुरुदेव के प्राप्त न होने पर जो आप ही को गुरु मानकर साधना करता है, उसके सभी कार्य सफल होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।
लहैं मनोरथ गृही विरागी ॥

• हे गायत्री माता ! जो व्यक्ति सहज श्रद्धा, सुरुचि एवं निष्ठापूर्वक आपका स्मरण करता है, वह परम सौभाग्यशाली है। हे मां ! आपके स्मरण करने से गृहस्थ एवं गृह त्यागी दोनों ही मनोनुकूल श्रेष्ठ अनुदान प्राप्त करते है।

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।
सब समर्थ गायत्री माता ॥

हे वरदायिनी माँ ! आप अपने भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, वशिता,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रुत एवं दृष्टि शक्ति प्रेरणा) तथा नौ निधि (शंख, मकर, कच्छप, पद्म, महापद्म, मुकुंद, कुंद, नील, चर्या) प्रदान करने में समर्थ हैं।

ऋषि, मुनि, यती, तपस्वी, जोगी ।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ॥

ऋषि, मुनि, तपस्वी, योगी, सिद्ध जन तथा दुःखी, अर्थ की इच्छा रखने वाला, चिंता मग्न और संसारी-

जो जो शरण तुम्हारी आवें ।
सो सो मन वांछित फल पावें ॥

जो-जो भी आपकी शरण में आता है, वह मनोनुकूल फल प्राप्त कर लेता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बल, बुद्धि, विद्या, शील स्वभाऊ ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ ॥

हे मातेश्वरी ! तेरी कृपा से बलवान, बुद्धिमान, विद्वान, शीलवान ये सभी अर्थ, वैभव, यश, तेजस्विता तथा उत्साह प्राप्त करते हैं ।

सकल बढ़ें उपजे सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करे जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ॥

जो व्यक्ति श्रद्धा निष्ठापूर्वक आपका ध्यान करते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस गायत्री चालीसा का नित्य पाठ करते हैं, वे श्रेय और प्रेय (सांसारिक सुख एवं पारलौकिक सुख) दोनों ही प्राप्त करते हैं तथा उन पर सदैव आपका वरदहस्त बना रहता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि

धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ- *उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अपनी अंतरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को संमार्ग की ओर प्रेरित करे।*

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ आरती गायत्री जी की ॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री।
दुःख, शोक, भय, क्लेश, कलह दारिद्र्य दैन्य हर्त्री॥
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगतधातृ अम्बे।
भवभयहारी, जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे॥
भय हारिणि भव तारिणि अनघे, अज आनन्द राशि।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥
कामधेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीता॥
ऋग्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार, सुषुम्ना, शोभा गुण गरिमे॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी।
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी॥
जननी हम हैं दीन, हीन, दुःख, दारिद के घेरे।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत, तऊ बालक हैं तेरे॥
स्नेहसनी करुणामयि माता, चरण शरण दीजै।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे, दया दृष्टि कीजै॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये॥
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि त्राता।
सत् मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता॥

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिशन की प्रमुख पत्रिकाएँ

(१) **अखण्ड ज्योति** (मासिक)

वार्षिक शुल्क-१०८.००, आजीवन-२०००.०० रुपया।

पता : अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा-३

फोन : (०५६५) २४०३९४०

(२) **युग निर्माण योजना** (मासिक)

वार्षिक शुल्क-५४.००, आजीवन-१०००.०० रुपया।

पता : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

(३) **प्रज्ञा अभियान** (पाक्षिक) वार्षिक शुल्क-३०.००

पता : शांतिकुंज, हरिद्वार, फोन : (०१३३४) २६०६०२

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org